प्रातः क्लासx 21-10-68 ओमशान्ति पिताश्री शिव बाबा याद है?

रूहानी बाप बच्चों का अटेन्शन खींचवाते हैं। यह रूहानी पाठशाला है। वह जो स्कूल है वह होते हैं मनुष्यों की। जिसमें मनुष्य मनुष्य को देखते हैं। कोई बैरीस्टर है, डाक्टर है, कहेंगे हम बैरीस्टरी पढ़ते हैं। मनुष्य का योग मनुष्यसे ही हैं। यहां तुम समझते हो हम आत्मायें बैठे हैं। आत्मा को परमपिता परमात्मा बाप से योग लगाना है। अर्थात बाप को याद करना है। इसमें ही मेहनत है। सामने ब्रह्मा बैठा है परन्तु याद करना है शिव बाबा को। शिव बाबा खुद कहते हैं मुझे प्रकृति का आधार लेना पड़ता है। तुम भी आधार लेते हो नापार्ट बजाने। तो यह है पाठशाला। कौन पढ़ाते हैं? बेहद का बाप! बाप एक ही बार आकर इस रथ द्वारा पढ़ाते हैं। कहते हैं मीठे2 रूहानी बच्चों मैं निराकार हूं। मुझे सभी याद करते हैं क्योंकि मैं सभी आत्माओं का परमपिता हूं। लौकिक बाप को परमपिता नहीं कहेंगे। सभी आत्मायें एक बाप के बच्चे हैं। वह है उच्च ते उच्च भगवान। जैसे कालेज में स्टुडन्ट्स पढ़ते हैं तो बुधि टीचर तरफ रहती है। हम पढ़कर के यह बनेंगे। क्रे बैरीस्टर बनेंगे। यहां तुम समझते हो मैं आत्मा हूं, बाबा आया हुआ है इस भाग्यशाली रथ में। वह नालेजफुल है। मनुष्य सृष्टि का बीज रूप है। चैतन्य है। इस झाड़ के सारी आदि मध्य अन्त का उनको मालूम है। झाड़ कहो या सृष्टि चक्र कहो। यह बुधि में अच्छी रीत याद रखो हम अभी बाबा से पढ़ रहे हैं। शिव बाबा इस रथ द्वारा हमको पढ़ा रहे हैं। शिव बाबा हैं ही कल्याण~~कारी~~= कारी। आते भी हैं कल्याणकारी पुरुषोत्तम संगम युग पर। सभी मनुष्यों का कल्याण होता है। बाप है उच्च ते उच्च। वह इसमें बैठे हैं। इन द्वारा यह पढ़ाई पढ़ा रहे हैं। यह पढ़ाई पढ़कर तुम बच्चे भी उच्च ते उच्च बनते हो। बाप आया ही है तुम बच्चों को नर से ना० बनाने। एमआबजेक्ट ही यह है। मनुष्य से देवता बनना। तुमको देवता नहीं पढ़ाते हैं। बाप पढ़ाते हैं। उनको ही नालेजफुल कहा जाता है। रचयिता और सारी रचना के आदि मध्य अन्त की नालेज वह देते हैं। बाप कहते हैं मैं बीज रूप, वृक्षपति हूं। बृहस्पत दिन भी शुभ समझते हैं। बृहस्पत की दशाअच्छी होती है। तुम बच्चों पर राहू की दशा थी। अभी बदल कर बृहस्पत की दशा बैठी है। भारत ही राहू की दशा में है। फिर अभी बृहस्पत की दशा बैठनी है। कुछ भी न समझो तो नोट करो। यह बात बाबा से पूछेंगे। अभी तुम बच्चों का अटेन्शन सारा है ~~समझ~~ पढ़ाई पर। जैसे स्कूल में बच्चों का अटेन्शन एक तो टीचर तरफ रहता है दूसरा एमआबजेक्ट तरफ। अभी तुम बच्चों को बाप पढ़ा रहे हैं। सृष्टि का चक्र भी समझाते हैं। भक्ति मार्ग में तुम उल्टा समझते2 बिल्कुल ही उल्टी बन गये हैं। अभी बाप बैठ समझाते हैं मीठे2 बच्चे तुम तो विश्व के मालिक थे। तुम देवताओं को पूजने वाले हो ना। तुम देवीदेवता धर्म के भी हो, शिव बाबा के बच्चे भी हो। भारतवासी शिव को भी पूजते हैं। फिर देवताओं को भी पूजते हैं परन्तु वह जानते कुछ भी नहीं हैं। तुमको अभी पता पड़ा है हम शिव बाबा के बच्चे हैं, देवता बनने लिये पढ़ रहे हैं। शिववंशी भी हैं फिर देवी देवता धर्म के भी हैं। अभी देवी देवताओं को तुम पूजते हो फिर तुम्हीं देवी देवता बनेंगे। अभी हो शिववंशी। फिर विष्णुपुरी में जावेंगे। शिवंशी तो सभी हैं परन्तु वह बिचारे शिव को जानते ही नहीं हैं। यह समझते हैं कि वह सुप्रीम गाड फादर है। फिर टीचर भी यह नहीं जानते। वह लिबरेटर प्रीसेप्टर भी हैं। यह जानते हैं पर कब आकर लिबरेट करते हैं यह कोई भी नहीं जानते। तुम समझते हो बाप पुरुषोत्तम संगम युग पर ही आते हैं। सभी को लिबरेट कर ले जाते हैं। कल्याणकारी युग में आते हैं। जब कि सभी का कल्याण होता है। जैसे बाप कल्याण कारी है वैसे तुम बच्चे भी कल्याण कारी हो। इस समय तुम सभी कल्याण करते हो। तुम हो ईश्वरी मिशन। श्रीमत पर चल रहे हो। बाप कहते हैं मन्मनाभव। मुझे याद करो और सृष्टि चक्र को याद करो। राजाई को याद करो। तुम बच्चों को भी फिर यही संदेश सभी को देना है। कहते हैं बाबा सभी को कैसे देंगे। मुख से तो दे न सकेंगे। नहीं बच्चे। अखबारों द्वारा सभी को आवाज़ पहुंचेगा। अखबारों द्वारा ही तो इतना हंगामा हुआ है नाकि यह जादू करते हैं, भाई-बहन बनाते हैं। अभी एकएक को कैसे बैठ समझावें। इसमें तो बहुत समय लग जावेगा। वह हो जाता है चिट्ठी मार्ग। अभी तुमको सर्विस करनी है हिंग मार्ग की। यह तुम्हारे चित्र भी बड़े2 अखबारों में जाने से बहुतों—

को मालूम पड़ेगा। मुक्ति-जीवनमुक्ति गाड फादरली वर्थ राईट। यह तो किसको भी समझाना तो बहुत सहज है ना। फादर2 सभी कहते रहते हैं परन्तु समझते कुछ भी नहीं हैं। फादर को याद करते हैं तो जरूर फादर को आना पड़े। बाप जानते हैं भक्ति मार्ग में सभी रावण के जेल में अर्थात पराई राज्य में हैं। मुझे भी पराई राज्य में बुलाते हैं। ओ दूर देश के रहने वाले आओ देश पराये। यह रावण का पराया देश है ना। यह ज्ञान की बातें हैं। बापू गांधी जी भी गाते थे पतित-पावन ...यह उनको पता नहीं था कि पतित किसको पावन किसको कहा जाता है। पतित को पावन बनाने वाला कौन है। हाथ में तो गीता उठाते थे। और कहते थे पतित-पावन सीता-राम। सभी सीतायें ब्राईड्स को आकर पावन बनाओ। फिर पिछाड़ी में कह देते थे रघुपति राघव राजा राम। वह तो फिर त्रेता का हो गया ना। श्रीकृष्ण के लिये कहे वह तो फिर भी सतयुग का मालिक है। वह तो त्रेता का हो जाता। दो कला कम हो जाते हैं। तो उनका थोड़ेही नाम लेना चाहिए। वह तो सेकण्ड ग्रेड में है। अभी बाप तुम बच्चों को समझाते हैं तुम युध के मैदान मे हो। जो माया से हार खाते हैं उनको क्षत्री कहा जाता है। तुम हो रूहानी क्षत्री। इनकागनिटो। अन्डरग्राऊन्ड (गुप्त) सच्ची तुम हो। किसको भी पता नहीं है तुम बाप से कैसे राज्य लेते हो। तुम हो अननोन वारियर्स हो। और फिर वेरी वेल नोन। तुम बहुत पूजे जाते हो। देवियों को देखो कितनी पूजा होती है। अभी तुम हो संगम युग पर। तो यह नालेज धारण करनी चाहिए। नई दुनिया के लिये पुरुषार्थ करना है। यह है पुरानी दुनिया। यहां तो अथाह दुःख है। बाबा ने कहा था अपार दुःखों की लिस्ट बनाओ। लिस्ट निकाली थी परन्तु अभी छपाया नहीं है। ईनको कहा ही जाता है दुःखधाम। अपरमअपार दुःख है। नई दुनिया में है अपरमअपार सुख। उनको हेविन, स्वर्ग कहा जाता है। यह है नर्क। हेल। अभी तुमको पता पड़ा है गोल्डेन एज से हम आयरन एज में कैसे जाते हैं। सभी आत्मायें ऊपर से यहां आती हैं पार्ट बजाने। बाबा ने समझाया है तुम आत्मायें रूहानी भाई2 हो। वह है जिसमानी भाई-भाई। भाई (आत्मा) ही पार्ट बजाते हैं जिस्म के साथ। तो तुम बच्चों को रूहानी बाप बैठ समझाते हैं। यह देहधारी भी तुम्हारा भाई है। ऊच्च ते ऊच्च एक भगवान ही है। फिर सूक्ष्मवतन में हैं ब्रह्मा विष्णु शंकर। बाप ने समझाया है यह सा० के लिये हैं। शंकर तो है नहीं। यह भी समझाया है ब्रह्मा है अव्यक्त। जिसका बच्चियां सा० करती हैं। तुम भी ऐसे फरिश्ते बनेंगे। वहां हड्डी मास नहीं रहता। यह तो हड्डी मास वाला है ना। इनको भी भूल जाना है। अपन को आत्मा समझ बाप को और घर को याद करना है। पाठशाला में तुमको पढ़ाया जाता है कि तुम फिर से सो देवता बनो। अनेक बार तुम ही बने थे। फिर बनना है। यह बड़ा ही वन्डर है। दुनिया इन बातों को कुछ भी नहीं जानती। उन्हों को कहा ही जाता है तुच्छ बुधि। सतयुग में तो तुच्छ बुधि जा नहीं सकते हैं। बिल्कुल छी छी बुधि है। बाप कहते हैं तुम सतयुग में चलने लायक नहीं हो। बहुत ही छी2 पतित हो। यह है विषस वर्ल्ड। वायसलेस वर्ल्ड थी। अभी विषस हैं। 5 विकार सब में है। वहां तो 5 विकार होते ही नहीं। अभी बाप समझाते हैं तुमको निर्विकारी जरूर बनना है। अभी सभी को वापिस जरूर जाना है। अभी यह है क्यामत का समय। हिसाब किताब चुकुत कर सभी को सतोप्रधान बनना ही है। आत्मा को ही बनना है। यह भी जानते हो आत्मा अविनाशी है। उसमें पार्ट भी अविनाशी भरा हुआ है। जन्म व जन्म जो पार्ट बजाते हैं वह अविनाशी हैं। फिर कल्प बाद भी वही पार्ट बजावेंगे। वही तन धारण करेंगे। 84 जन्म, 84 शरीर, 84 नाम जो लिये हैं वही फिर रिपीट होगा। यह ड्रामा अनादि रिपीट होता रहता है। यह भी तुम बच्चे जानते हो। अभी बाप समझाते हैं बच्चे अभी इस देह को भी छोड़ना है। सिन्धी में कहते हैं छड तो छूटे। अर्थात चले जावेंगे अपने मुक्तिधाम। बन्दर भुगरे मुट्ठी लेते हैं जब तक छोड़ो नहीं तब तक छूट न सके। बाप भी कहते हैं देह सहित देह के सभी सम्बन्ध छोड़ो तो छूटे। नहीं तो बुधियोग लटक पड़ेगा। सभी बन्धन छोड़ो। अपन को आत्मा समझो। बाप को याद करो तो तुम्हारी आत्मा सतोप्रधान बन जावेगी। आत्मा ही याद करती है ना। इस पुरुषोत्तम संगम युग पर ही तुमको नालेज मिलती है। फिर 5000 वर्ष बाद रिपीट होगा। यह बातें कोई शास्त्रों में नहीं हैं। बाप पढ़कर सदगति दे जाते हैं। कहते हैं यह नालेज फिर 5000 है

21-10-68

वर्ष देंगे। पुराने ते पुराना इन ल०ना०का चित्र है। 5000वर्ष से जास्ती पुरानी कोई चीज होती ही नहीं। मनुष्य तो गपोड़ा लगाते रहते हैं कि इतने वर्षकी यह पुरानी चीज है। परन्तु हो नहीं सकता। यह खेल ही है 5000वर्ष का। पुराने ते पुराना शिव का लिंग ही है। परन्तु उनकी वैल्यु है नहीं। क्योंकि शिव बाबा पत्थर में डाल दियाहै। देवताओं की चित्रों की वैल्यु देखो कितनी है। दिलवाला मंदिर के एक एक मूर्तिका 50हजार 20हजार किमत अमेरिकन लोग दे देंगे। बहुतों के पास पुराना सामान रहता है। परन्तु 5000वर्ष से पुरानी चीज कोई हो नहीं सकती हैं। जिसने जो कहा वह मान लेते हैं। बुध को 2200 वर्ष हुये हैं तो इतनी पुरानी चीज़ बुध की हो कैसे सकती हैं। तुम हो मीठे2 सिकीलधे बच्चे। 5000वर्ष के बाद आकर बाप सेमिलते हो। प्रेम के आंसू भी आ जाते हैं। इनको तो कब आसूं नहीं आता। यह बहुत बहुत कम रोता, तुम तो अथाह रोने वाले हो। स्त्री जितना रोती है उतना और कोई नहीं। कोई पास जाते हैं तो रोना जरूर आता है। अभी बच्चों को बाप समझाते हैं आधा कल्प के लिये तुमको कब रोना नहीं हैं। पुरुषार्थ पुरी रीति करना है। विश्व के मालिक बनते हो रोवेंगे कैसे। तुमको पढ़ाने वाला है बाप। उच्च से ते उच्च बाप के बच्चे रोवेंगे कैसे। रोने से देह-अभिमान आ जाते हैं। अभी अजन तुमको पूरी खुशी नहीं रहती है। यह जो गायन है अति इन्द्रियसुख गोप-गोपियों से पूछो। सो कब? बाप कहते हैं वह तुम्हारी अवस्था पिछाड़ी में होनी है। जब रिजल्ट निकलती है फिर तुम्हारी खुशी बढ़ती जावेगी। तुम जब सतोप्रधान थे तो बहुत ही खुशी में थे। कब अकाले मृत्यु नहीं होती थी। वहां दुःख का नाम निशान नहीं होता। तो वह रिजल्ट पिछाड़ी में निकलती है। वह अन्दर में खुशी रहती है हम विश्व के मालिक बनने वाले हैं। और कोई होगा ही नहीं। सतयुग में वजीर आदि कोई होते ही नहीं। वजीर तब होते हैं जब पतित बनते हैं। तुमको कोई से भी राय लेने की दरकार ही नहीं। एक ही बार तुमको राय मिलती है। जो आधा कल्प चलती है। सतयुग में वजीर होता ही नहीं। वजीर तब होते हैं जब विकारी बनते हैं। अभी तो तमोप्रधान होने कारणढेर वजीर हैं। बड़ा वजीर फिर छोटे2 वजीर। दूसरों की मदद चाहिए क्योंकि खुद में इतना अकल नहीं हैं। इन(ल०ना०) को तो बहुत अकल हैं। कितनी ताकत रहती है सारे विश्व पर राज्य चलाने की। कोई खिट2 नहीं। फिर जैसे2 ताकत कम होती जाती है तो डरपोक होते जाते हैं। जहां-तहां ढेर मिनिस्टरस हैं। भूलें भी करते रहते हैं। बाप समझाते हैं रिलीजन ईज माईट। वहां तुम्हारी कितनी माईट रहती है। सतोप्रधान हो ना। जो नये2 आते हैं उनमें भी ताकत रहती है इसलिये उन्हों का प्रभाव निकलता है। अभी तुम तमोप्रधान से सतोप्रधान बन रहे हो। तुम्हारा पार्ट सबसेउच्च ते उच्च है। शुरू से लेकर पिछाड़ी तक पार्ट बजाते हो। सभी एक्टर्स हैं। बाबा में बड़ी ताकत है फिर बाबा से ताकत लेते हो। सबसेजास्ती तुम ताकत लेते हो याद की यात्रा से। सारे विश्व केतुम मालिक बनते हो। कब स्वप्न में भी याद न होगा। यह बाप ही बैठ बताते हैं। इसमें सुंझने की बात ही नहीं। तुम निश्चय बुधि हो जाते हो तो बाप पर कुर्बान जाते हो। भक्ति मार्ग में तुम गाते थे ना तुम कितने पुराने आशुक को एक मुझ माशुक के। कहते आये हो बाबा आप आवेंगे तो हम वारी जावेंगे। कुर्बान जावेंगे। हम आप पर वारी जावेंगे तो आप हमारे पर2। बार वारी जावेंगे। कब वारी जाते हैं जब विनाश होता है। देह सहित देह के सभी कुछ खलास हो जाना है। इन से पहले हमएक बार वारी जावेंगे आप 2। बार वारी जाना। तुम बच्चे 2। जन्मों का वरसा लेते हो ना। यह बेहद का फादर हो 2। जन्मों का वरसा देते हैं वहां तो सदैव सुख ही सुख है। दुःख में सुमिरण सभी करते हैं। सुख में करे न कोय। क्योंकि 2। बार बाबा वारी गया। फिर तुम सुख ही सुख भोगते हो। कल तुमको सुखी बनाकर गये। फिर आये हैं। लाखोंवर्ष की तो बात ही नहीं। कल तुमको यह बनाकर गये, फिर तुम 84 जन्म ले यह बने हो। अभी फिर तुम्हारे निमंत्रण पर आये हैं। कहते हैं बाबा पराये देश में आओ। आसूं भी आ जाते हैं। बच्चों ने बहुत दुःख देखी है। भक्ति मार्ग में इन बच्चों बहुत दुःख देखी हैं। गरुड़पुराण में भी विषय वैतरणी नदी दिखाते हैं। कहते हैं ना गऊ

पूंछ पकड़ कर पार हो जावेंगे। कई ऐसे समझते हैं अच्छा2तुम स्वर्ग में जावेंगे तो हम तुम्हारा पूंछ पकड़ लेंगे। परन्तु ऐसी बात तो है नहीं। अभी तुम बच्चों को कितना अकल मन्द बनाते हैं। बच्चों को बैठ समझाते हैं। जब तक यह रथ है बाबा प्रवेश करते हैं। इम्तहान पूरा होगा तो फिर वह भी चले जावेंगे। यह भी जावेंगे। शास्त्रों में भी है आटे में लून। बाकी सभी है झूठ। गीता भी है परन्तु झूठडाल दिया है। यह कोई नहीं जानते हैं परमपिता परमात्मा तोमों धर्म की स्थापना करते हैं। श्रीकृष्ण तो है छोटा बच्चा। वह कैसे बाप बनेगा। बाप तो ऊपर से आते हैं। वह है सभी का बाप। तो अभी तुम इन बातों को समझते हो। इन बातों को अच्छी रीत समझाना भी है। आत्मा ही सभी कुछ करती है। आत्मा ही कर्म करती है± आरगन्स द्वारा। तो आत्म-अभिमानी बनना चाहिए ना। बाप आकर आत्म-अभिमानी बनाते हैं। सिवाय बाप के और कोई आत्माभिमानी बनाये न सके। आत्मा का ज्ञान भी कोई में नहीं हैं। कहते हैं आत्मा अंगूष्ट मिसल है। और दूसरे तरफ फिर कहते हैं भृकुटि के बीच चमकता है अजब सितारा। अभी राईट क्या है। तुम तो समझते हो आत्मा बिल्कुल छोटी बिन्दी है। उनको इन आंखों से कोई देख नहीं सकते हैं। समझा जाता है हमारे इस शरीर में आत्मा अविनाशी है। यह शरीर विनाशी है। यहशरीर विनाशी है। आत्मा का निवास स्थान परमधाम में है। यहां यह बेहद का बड़ा भाण्डवा है। जिसमें सभी पार्ट बजाते हैं। कितना बड़ा भाण्डवा है। अभी देवताओं का राज्य तो है नहीं। अभी है रावण राज्य। फिर राम-राज्य होता है। जिसको डिटीज्म कहा जाता है। इसमें सूर्यवंशी चन्द्रवंशी दोनो है। सतयुग को कहा जाता है स्वर्ग। त्रेता को कहा जाता है सेमी स्वर्ग। वह सूर्यवंशी वह चन्द्रवंशी। जो माया पर पूरी जीत नहीं पहन सकते। वह चन्द्रवंशी बन जाते हैं। तो बाप समझाते हैं कितना समझाकर कितना समझावे। पिछाड़ी में फिर कहते हैं मन्मनाभव। अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो। तुम अनुभव भीसुनाते हो बराबर बाप आकर हमको मनुष्य से देवता बनाते हैं। देवता से मनुष्य, मनुष्य से फिर देवता यह तुम्हारा ही पार्ट है। यह भी खेल है। फिर पिछाड़ी में कहते हैं जाती क्या बतावें। बाप को याद करो और राजाइ को याद करो। तो अंत मत सो गति हो जावेंगी। बाप की सदगति देने को जो मत है वह बाप ही जाने। इसलिये कहते हैं तुमरी गत मत तुम्हीं जानो। अर्थात सदगति के मतदेना तुम्हीं जानो। तो वह जब आवेंगे तब ही आकर बतावेंगे। फिर 5000वर्ष बाद आकर मिलेंगे। बच्चे भी कहते हैं बाबा हम 5000वर्ष बाद आप के पास आते हैं। बाप कहते हैं मैं भी ड्रामा अनुसार बांधयमान हूं। भावी कोई ईश्वर की नहीं। ड्रामा की भावी है। मैं जो राज्य स्थापनकरता हूं। वहां अकाले मृत्यु कब होता ही नहीं। यहां तो बैठे2 मनुष्य मर जाते हैं। अभी श्रीमत पर तुम अपना राज्य स्थापन कर रहे हो। तुम जानते हो हमारे राज्य में अकाले मृत्यु कब होता ही नहीं। पूरे 150वर्ष की आयु होती है। पवित्रता है तो पीस प्रास्पर्टी भी है। अभी सभी कैरेक्टर्स सुधारने लिये कहते रहते हैं। कैरेक्टर्स पहले2 है ही पावन बनने को। पावन बनने से कैरेक्टर्स भी सुधर जाते हैं। एक सुधरा तो सभी सुधर जाते। एक के बिगरने से सभी बिगर जाते हैं। अभीपुरुषार्थ कर ऐसा फूल बनना है। लक्ष्मी नारायण को शंख चक्र गदा आदि है थोड़ेही परन्तु ब्राह्मणों को यहशोभेगी नहीं इसलिये विष्णु को दे दिया है। ज्ञान शंख है तुम्हारा। देवताएं थोड़ेही ज्ञान देते हैं। ब्राह्मणों की माला नहीं होती है। रुद्र माला और रुण्ड माला होती है। शिव है सरनेम बेहद का। विष्णु भी है सरनेम बेहद का। इसलिये उन्हीं की माला है। ब्राह्मणों की माला होती नहीं।

ऐसी कोई बात है नहीं जो तुम न समझ सको। और पूछने पड़े। बाप को याद करना है जिससे ही विकर्म विनाश होंगे। स्वदर्शनचक्रधारी भी हो। 84 की नालेज है बाकी क्या पूछते हो। बाप सभी रेजकारी समझाते ही रहते हैं। अच्छा। मीठे2 सिकीलधे रूहानी बच्चों को रूहानी बाप व दादा का याद प्यार गुडमार्निंग। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।

-: विश्व की बादशाही का श्रृंगार याद है?:-